प्राक्कथन

वर्तमान और उभरती चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका की मैं तारीफ करता हूं। इस क्रम में कृषि में सकारात्मक वृद्धि दर हासिल करने में निस्संदेह परिषद द्वारा अपनाए जा रहे नवोन्वेषी अनुसंधान कार्यक्रमों, कौशल युक्त और विशेषज्ञ सेवाएं, अद्यतन प्रौद्योगिकियां और सीमित संसाधनों का अधिकतम उपयोग उत्पादन बढ़ोत्तरी हेतु उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना, आदि का खासतौर से उल्लेख किया जा सकता है। भा.कृ.अनु.प. के नवोन्वेषी प्रौद्योगिकी पर आधारित प्रयासों की बदौलत ही भारतीय कृषि को मजबूती प्रदान कर पाना संभव हो सका है और वर्ष के दौरान 60 से अधिक खाद्यान्न और बागवानी फसलों की सुधरी किस्मों को विभिन्न कृषि पारिस्थितिकी प्रक्षेत्र के कृषकों के लिए जारी किया जाना इस दावे की पुष्टि करता है। मौसम की मार से बचाव के लिए धान, मोटे अनाजों, दलहन और तिलहन की अल्प अवधि एवं सूखा सहिष्णु किस्मों का विकास किया गया। अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों में कटाई उपरांत की हानियों और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का असर न्यूनतम करने पर विशेष बल दिया गया। इससे देश की कृषि को टिकाऊ बनाए रखने में सहायता मिली।

भ्रूण स्टेम कोशिकाओं के प्रयोग से दूसरे और तीसरे भैंस के कटड़े का जन्म इस दौरान हुआ जो कि एक शानदार उपलब्धि कही जा सकती है। इस तकनीक का प्रयोग इच्छित लिंग और श्रेष्ठ जर्मप्लाज्म के पशुओं के उत्पादन में किया जा सकता है। मुंहपका और खुरपका रोगों के निदेशालय सम्बंधित परियोजना को एफ.ए.ओ की दक्षिणी एशिया की क्षेत्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में प्रदत्त मान्यता को देश में उपलब्ध बेहतरीन अनुसंधान सुविधाओं की वैश्विक पहचान के तौर पर देखा जा सकता है। इसी प्रकार देश में पहली बार बाड़े में समुद्री मछली कोबिया का प्रजनन भी इस दौरान की एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

कृषि शिक्षा में भा.कृ.अनु.प. की बढ़ी हुई वैश्विक साख को दर्शाने के लिए यह बताना पर्याप्त होगा कि अंतरराष्ट्रीय फेलोशिप योजना की शुरुआत करने पर इस वर्ष 19 देशों के 47 विदेशी छात्रों के आवेदन मिले। कुल 192 कृषि विज्ञान केन्द्रों और आठ प्रक्षेत्र प्रायोजना निदेशालयों में ई-कनैक्टिविटी की सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं जिससे कि अत्यंत गरीब व्यक्तियों तक भी प्रौद्योगिकी की पहुंच संभव हो सके। भा.कृ.अनु.प. के तहत कार्यरत कृ.वि.के. के माध्यम से किसान मोबाइल एडवाइजरी सर्विस के द्वारा कृषि के विभिन्न आयामों से संबंधित 1.5 लाख संदेश 64,000 कृषकों तक पहुंचाने का कार्य भी इस अवधि की उपलब्धि है। परिषद के इन प्रयासों से नई प्रौद्योगिकियों को समयबद्ध तरीके से अपनाने में 106 लाख कृषकों और प्रसार कर्मियों को काफी मदद मिली। अनुसंधान कार्यों को अधिक सुचारू बनाने और परिषद द्वारा विकसित आशाप्रद प्रौद्योगिकियों के व्यवसायीकरण के मुद्दों हेतु भा.कृ.अनु.प. द्वारा 100 करोड़ रुपये के प्रावधान से बुनियादी और महत्वपूर्ण अनुसंधानों हेतु राष्ट्रीय कोष तथा दस बिजनेस एवं प्लानिंग यूनिट्स की स्थापना इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। भा.कृ.अनु.प. - उद्योग बैठक के दौरान परिषद द्वारा निम्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया : (i) बीज, रोपण सामग्री और पौध जैव प्रौद्योगिकी उत्पाद; (ii) नैदानिक, टीके और अन्य पशु जैव प्रौद्योगिकी उत्पाद; (iii) कृषि उपकरण एवं औजार तथा (iv) कटाई उपरांत अभियांत्रिकी एवं मूल्य अभिवर्द्धन। इस प्रकार उद्योग जगत के समक्ष परिषद द्वारा अपनी प्रौद्योगिकी उपलब्धि की झांकी प्रस्तुत की गई। इस बैठक के बाद अब क्षेत्रीय स्तर पर भी इस प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि सार्वजनिक-निजी भागीदारी का अनुसंधान एवं विकास के सभी कार्यक्रमों में क्रियान्वयन किया जा सके।

आगामी बीस वर्षों की भा.कृ.अनु.प. की भावी योजनाओं में वर्ष 2030 की भारतीय कृषि की राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों, संसाधन क्षमता, प्रतिस्पर्धा एवं टिकाऊपन पर जिस तरह से जोर दिया गया है उससे भविष्य की चुनौतियों के प्रति भा.कृ.अनु.प. की तैयारियों की झलक मिलती है।

मुझे यह जानकर भी अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि वर्ष 2009-10 के लिए डेयर/भा.कृ.अनु.प. द्वारा भारत सरकार के रिजल्ट फ्रेमवर्क डाक्यूमेंट (आरएफडी) के प्रथम चरण में किए गए संकायों को पूरा करने के लिए किए गए प्रयासों को श्रेष्ठ घोषित किया गया है। इसके अतिरिक्त एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है अमरीकी राष्ट्रपति द्वारा नवंबर 2010 की भारत यात्रा के दौरान भा.कृ.अनु.प. द्वारा विकसित कम लागात के कृषि उपकरणों की तारीफ मैं भा.कृ.अनु.प. को भारतीय कृषि को मजबूती प्रदान करने हेतु नए आविष्कारों और समयबद्ध प्रौद्योगिकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे समस्त प्रयासों के लिए बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि डेअर/भा.कृ.अनु.प. वार्षिक रिपोर्ट 2010-11 अनुसंधानकर्ताओं, नीति निर्माताओं तथा कृषि अनुसंधान एवं विकास से संबद्ध समस्त पर्णधारकों के लिए मूल्यवान संदर्भ सामग्री सिद्ध होगी।

(शरद पवार)
अध्यक्ष
भा.कृ.अनु.प. सोसायटी